

Class - B.A. PwA - II

Sub - Hindi (HON) paper - II

by Ravishankar Kumar

1) प्रयोगवाद एवं नयी कविता का तुलनात्मक परिचय दें।
 उत्तर - सन् 1943 ई० में अज्ञेय के संपादन में 'नार सप्तक' का प्रकाशन हुआ, यही से प्रयोगवाद का आरंभ माना जाता है। सन् 1951 में दूसरा सप्तक का प्रकाशन हुआ था। इस संकलन की शुरुआत में अज्ञेय ने लिखा कि प्रयोग का कोई वाद नहीं है। अर्थात्, नये-नये प्रयोगों के द्वारा कवि कविता के सत्य तक पहुँच सकता है।
 वस्तुतः प्रयोगवादी जीवन-सूत्रों को नई दृष्टि से देखने का आग्रही हैं। उन्होंने व्यक्ति, उसके सुख-दुःख, आशा-आकांक्षा को अधिक महत्व दिया। जब अज्ञेय ने 1959 ई० में तीसरा सप्तक का प्रकाशन किया, तब-तक नयी कविता स्थापित हो चुकी थी। प्रयोगवाद और नयी कविता के दौर ऐसे जुले-मिले हैं कि दोनों में कोई खास अंतर दिखलाई नहीं पड़ता। प्रसंगवश, नयी कविता प्रयोगवाद का विकास ही नहीं किन्ही मायने में उनसे प्रस्थान भी है। प्रयोगवाद वादसूक्त कविता है।

जबकि नयी कविता वादमुक्त, प्रयोग-
वाद में मध्यवर्गीय व्यक्ति का चि-
त्तन है, जबकि नयी कविता में
लघु मानव का। प्रयोगवाद में प्रयोग
पर बल है, जबकि नयी कविता
में प्रयोग पर बल नहीं है।

1954 ई. में जगदीश गुप्त के
संपादन में 'नयी कविता' नामक
पत्रिका का प्रकाशन हुआ, नयी
कविता के कवियों का मानना था
कि अनुश्रुतियों के नये स्वभाव-विद्यमान
को परंपरागत या सूक्ष्म भाषा-शैली में
नहीं बाँधा जा सकता, इस तरह
हिन्दी को नया अधिक तंत्र व नया
महावरा मिला। अधिकांश कवियों
ने नयी कविता को प्रयोगवाद
की विरासत या उसका विकसित
रूप माना है। प्रयोगवाद, प्रयोगवादी
कविता की मुख्य विषय-वस्तु आधु-
निक मध्यवर्गीय व्यक्ति की मान-
सिक कुँठारें थीं, गहरी आन्तमुखता
के कारण यह कविता अपनी संप्रेषणी-
यता में जटिल और दुरूह बन
गई। प्रयोगवाद की ही अगली कड़ी
'नयी कविता' में अस्मि-व्यक्ति की
ईमानदारी पर जोर देने के साथ
अनुश्रुति की प्रामाणिकता का विशेष
आग्रह महत्वपूर्ण बन गया।